A National, Registered, Peer Reviewed & Refereed Monthly Journal
Sanskrit Literature
Since March 2002
Research Link - 174, Vol - XVII (7), September - 2018, Page No. 75-76
ISSN - 0973-1628 ■ RNI - MPHIN-2002-7041 ■ Impact Factor - 2015 - 2.782

भवभूति के रूपकों में कारुणिक अभिव्यक्ति में आदर्श की स्थापना

प्रस्तुत शोधपत्र, भवभूति के रूपकों में कारुणिक अभिव्यक्ति में आदर्श की स्थापना से सम्बंधित है। भवभूति करुणवाद (त्रासदी) का उद्घोष करके भी उसे 'कल्याणोदर्क' ही मानते हैं, उसका पर्यावसान कल्याण में ही करते हैं। अतएव अन्त में सीता का मिलन आवश्यक है, यही अवभूति का करूणावाद है, जो यहीं की मिट्टी से उपजा और यहीं की मिट्टी का पला है, यहीं की परम्पराओं से फूट कर निकला है, कहीं बाहर से उधार या चोरी करके नहीं लिया, इस करूणवाद में जनाहित है, अहित नहीं, समाज की रचना है, विनाश नहं, शिष्टता है, उच्छृंखलता और उद्दण्डता नहीं, जीवन का संयोग है, निरवधिक वियोग नहीं, अमृत की ओर जाना है, मृत्यु की ओर नहीं, यही भारत का आशावाद है, जो यूरोप के निराशावाद के विरुद्ध मानव समाज को मृत्यु और विध्वंस से बचाकर जीवन की ओर प्रेरित करता रहेगा।

डॉ.निशा नामदेव

मानव हृदय के सूक्ष्मतम, गहनातिगहन भावों की अभिव्यक्ति करने वाले, पत्थरों को रूदन करा देने की क्षमता रखने वाले, वज्रहृदय को भी चीरकर रख देने वाले, करूण रस के पर्याय महाकवि भवभूति संस्कृत साहित्य के आकाश में देदीप्मान नक्षत्र की भांति सुशोभित है, जिनकी करूणा जीवन की अतल गहराई में छुपे हुए तथ्यों को उजागर करती है, नई जीवन दृष्टि की परिचायक है। करूण रस के अमर गायक महाकवि भवभूति ने अपनी करूणा में जिन आदर्शों का चित्रण किया है, वह न केवल साहित्यिक दृष्टि से बल्कि वर्तमान में जब मानव जीवन में नैतिक मूल्यों का ह्रास हो रहा है, इस परिवेश में लोगों को नयी प्रेरणा प्रदान करते हैं।

भवभूति करूणा में भी आदर्श को प्रतिस्थापित करते हैं, महावीरचरितम् में लंका नगरी अपनी दुर्गति देखकर शोकयुक्त हो जाती है, परन्तु फिर भी वह रावणादि असुरों के निन्दनीय कृत्यों को कोसती है और राम की विजय को सही बतलाते हुए धर्म व न्याय का पक्ष लेती है, लंका का मानवीकरण कवि के प्रकृति प्रेम का परिचय देता है साथ ही वर्तमान में जब प्रकृति नष्ट होने की कगार पर है, प्रकृति से प्रेम करने की प्रेरणा प्रदान करता है।

मालतीमाधवम् में भवभूति पात्रों के माध्यम से आदर्श का चित्रण करते हैं। माधव के वियोग में शोकाकुल मालती अपने प्राणों का परित्याग भले ही करना पड़े परन्तु वह अपने कुल की प्रतिष्ठा पर आंच नही आने देना चाहती है। वह अपने कुल की प्रतिष्ठा को बनाये रखना चाहती है, वह कहती है–

''ज्वलतु गगने रात्रौ रात्रावखण्डकलः शशी,
दहतु मदनः किं वा मृत्योः परेण विधास्यतः।
मम तु दायितः शलाध्यस्तातो जनन्यमलान्वया,
कुलममलिंन न त्वेवायं जनो न च जीवितम्।''(1)

मालती के दुःख में दुःखी माधव को शोकाकुल देखकर मकरन्द अपने मित्र के दुःख में शोकयुक्त हो जाता है, माधव के चेतनाहीन होने पर उसे मृत जानकर मकरन्द भी मृत्यु का वरण कर लेना ही श्रेयस्कर मानता है, वहीं मालती को मृत मानकर उसकी सखी लवङ्गिका भी मृत्यु का वरण करना चाहती है। इस प्रकार भवभूति ने शोक में भी आदर्श मैत्री का उपस्थापन किया है। साथ ही माधव व मालती के प्रेम व विरह चित्रण में आदर्श उदात्त विचारों को चित्रित किया है।

उत्तररामचरित का तो शोक ही प्रजारंजन के लिए प्रेम के बलिदान से निःसृत है। राम के द्वारा अपनी निर्दोष व गर्भिणी पत्नी सीता का निर्वासन औचित्य की दृष्टि से सही है या नहीं यह एक प्रश्नचिन्ह है, न्यायप्रिय सम्राट राम ने प्रजा में प्रसरित झूठी अफवाह के कारण अपनी गर्भिणी पत्नी का परित्याग कर दिया क्या सीता उनकी प्रजा नहीं थी? क्या सीता के प्रति उनका कोई कर्त्तव्य नहीं था? क्यों उन्होंने निरपराध सीता का परित्याग कर दिया? परन्तु भवभूति ने पंचवटी में राम के कारूणिक रूदन के द्वारा सीता परित्याग के इस कलंक को धो दिया है, जब राम का दुःख असहनीय वेदना से युक्त है, तब भी वह अपनी प्रजा से अपने अपराध के लिए क्षमा याचना करते हैं, वहीं निरपराधिनी सीता इन सब पर भी राम के प्रेम में निमग्न है, रामका यह त्याग कर्म भी सीता के अर्पूव प्रेम को अवसान नहीं कर सका, वह राम के दुःख में दुःखी है, वह राम के दुःख में अपना दुःख भूलकर राम के मूर्च्छित हो जाने पर अपने कर स्पर्श से उन्हें संज्ञावान बनाती है।

सीता राम को वासन्ती द्वारा दोषित किये जाने पर वासन्ती को भी उलाहना देती है, यहीं तो करूण में भी प्रेम की आदर्श पराकष्ठा है। सीता के ऐसे निस्वार्थ और निष्कलंकित प्रेम ने कवि की करूणा को साहित्य की ऊँचाइयों पर स्थापित कर दिया है, वहीं राम भी सीता को निर्वासित कर जब पंचवटी में प्रवेश करते हैं, तो पूर्व स्मृतियों का

द्वारा श्री निशांत कुमार, फ्लैट नं.302, ए-ब्लॉक, कमला अपार्टमेंट, बरहेटा रोड़, लहरिया सराय, दरभंगा (बिहार)

स्मरण कर फूट– फूटकर रोते हैं, तब उनकी व्यथा उनके द्वारा किये गये सीता परित्याग दोष का निवारण कर देती है, आदर्श राजा तथा आदर्श पति के कर्त्तव्यों का निरूपण भवभूति ने चित्रित किया है। अत्यंत शोचनीय अवस्था को प्राप्त करके भी सीता राम के लिए दुर्वचनों, तिरस्कृत वचनों का प्रयोग नहीं करती है। सीता, भारतीय नारी का आदर्श, श्रेष्ठ पतिव्रत धर्म का अनुपम चित्रण है यही तो भवभूति का आदर्श है जो कारूणिक अवस्था में भी शुद्ध दाम्पत्य प्रेम को चित्रित करता है। राम ने सीता का परित्याग तो कर दिया, परन्तु वह एक क्षण के लिए भी सीता को विस्मृत नहीं कर सके।

शम्बूक के वध में भी राजा की अर्न्तव्यथा का चित्रण किया गया है, निरपराध शम्बूक का वध करना राम के लिए अत्यंत कठिन कार्य है, वह इसे अमानवीय समझते हैं तथा स्वयं के हृदय को अत्यंत कठोर मानते हैं जो इस कार्य के लिए उद्धृत हुए है।

यही महाकवि के रूपकों की कारूणिक अभिव्यक्ति में आदर्श की स्थापना है, क्योंकि दुःख में ही व्यक्ति के प्रेम, धर्म, मित्रता, कर्त्तव्यों का परीक्षण होता है और उस परिस्थिति में सच्चा निदर्शन, मानवीय मूल्यों का सही आंकलन कवि के काव्य को श्रेष्ठत्व प्रदान करता है। इस संदर्भ में डॉ0 महावीर जी यह कर्थन सार्थक है :

''भवभूति करूणवाद (त्रासदी) का उद्घोष करके भी उसे 'कल्याणोदर्क' ही मानते हैं, उसका पर्यावसान कल्याण में ही करते हैं। अतएव अन्त में सीता का मिलन आवश्यक है, यही अवभूति का करूणवाद है, जो यही की मिट्टी से उपजा और यही की मिट्टी का पला है, यहीं की परम्पराओं से फूट कर निकला है, कहीं बाहर से उधार या चोरी करके नही लिया, इस करूणवाद में जनहित है, अहित नहीं, समाज की रचना है विनाश नहीं, शिष्टता है उच्छृखंलता और उद्दण्डता नहीं, जीवन का संयोग है, निरवधिक वियोग नहीं, अमृत की ओर जाना है मृत्यु की ओर नहीं, यही भारत का आशावाद है जो यूरोप के निराशावाद के विरूद्ध मानव समाज को मृत्यु और विध्वंस से बचाकर जीवन की ओर प्रेरित करता रहेगा।''[2]

संदर्भ :

(1) मालतीमाधवम्।

(2) *संस्कृत नाटकों में करूण अभिव्यंजना, पृष्ठ संख्या 56.*

❁❁